चित्रकूट 07 नवम्बर । विगत वर्षों की भॉति इस वर्ष भी तुलसी विवाह बड़े धूम–धाम से गाजे–बाजे के सहित श्री रघुवीर मंदिर की बड़ी गुफा में मनाया गया। देवस्थानी एकादशी को सायं बारात निकालकर नगर भ्रमण किया। तत्पश्चात आज प्रातः तुलसी माता की विदाई की गयी । सभी कार्यक्रम हिन्दु रीति–रिवाज वैदिक रीति से आचार्य रामकरण शुक्ल ने कराया । वर पक्ष का दायित्व राजकोट के प्रसिद्व व्यवसायी नारायण भाई के पुत्र श्री तुलसी भाई अकबरी ने अपनी पत्नी के सहित एवं कन्या पक्ष से प्रेमजी भाई डिसा राजकोट ने अपनी पत्नी के साथ सम्पूर्ण दायित्व का निर्वाहन किया और मामा की भूमिका श्री विपिन भाई हरमाने ने निभाई। तुलसी विवाह के महत्व को आचार्य रामकरण ने कहा कि कार्तिक महीने में जो व्यक्ति तुलसी की स्थापना करते हैं, पूजा करते है विवाह करते हैं वे एक करोड़ युगों तक भगवान के साथ निवास करते हैं तुलसी विवाह के कारण को स्पष्ट करते हुए कहा कि वृंदा, शंखासुर दैत्य की पतिव्रता पत्नी थी भगवान ने इस प्रलयकारी दैत्य को मारने की कोशिश की किन्तु वृंदा के प्रभाव से इसे नहीं मार पाये। तब वृंदा के स्नान करते समय भगवान ने शंखासुर का रूप धारण कर वृंदा के साथ मिलन किया । उसके पतिव्रत धर्म को तोड़ा इससे क्रोधित होकर वृंदा ने भगवान को पत्थर होने का श्राप दे दिया। भगवान ने भी पूर्व वृतांत बताते हुए वृंदा को वृक्ष बनने का श्राप दिया और कहा कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता हूॅ । कलयुग में भगवान गांडकी नदी में ठाकुर जी के रूप में प्रकट हुए और वृंदा वृंदावन में तुलसी के वृक्ष के रूप में प्रकट हुयीं। ठाकुर जी का विवाह तुलसी के साथ वृंदावन में कार्तिक की देवस्थानी एकादशी को हुआ। यह वृतांत देवी भागवत एवं भविष्येत्तर पुराण में मिलता है। तभी से तुलसी एवं ठाकुर जी का विवाह गृहस्थ, संसारी साधूसंत लोग करके अपने को धन्य समझते हैं। श्री रघुवीर मंदिर बड़ी गुफा जानकीकुण्ड में भी श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी डा0 बी0के0 जैन एवं श्रीमती ऊषा जैन के संचालन में बड़े धूमधाम, बाजे गाजे वैदिक रिवाज से मनाया जाता है। इस अवसर पर सद्गुरु परिवार के अलावा श्री महंत ओंकारदास निर्मोही अखाड़ा, श्री सुखराम दास, श्री आनन्द दास सहित अनेक संत महंत उपस्थित रहे।

राजेन्द्र मिश्र
जानकीकुण्ड, चित्रकूट